उपसंहार

उपसंहार

''पहला गिरमिटिया' तथा 'महानायक' का विचार पक्ष : तुलनात्मक अध्ययन'' के अध्ययन करने के पश्चात् निष्कर्ष के रूप में जो तथ्य सामने आते हैं, वे अध्याय विभाजनानुसार यहाँ प्रस्तुत हैं -

प्रथम अध्याय : ''गिरिराज किशोर तथा विश्वास पाटील के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का तुलनात्मक अध्ययन'' :

विवेच्य दोनों उपन्यासकारों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन करने के पश्चात् उनके व्यक्तित्व में हमें कुछ बातों पर साम्य दिखाई देता है, तो कुछ बातों पर भेद दिखाई देता है।

साम्य -

दोनों उपन्यासकारों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को लेकर जो साम्य दिखाई देते हैं, वे इस प्रकार हैं -

1. गिरिराज किशोर और विश्वास पाटील, दोनों क्रमश: हिंदी तथा मराठी उपन्यास साहित्य में श्रेष्ठ हैं।
2. दोनों साहित्यकारों ने अपने लेखन की शुरुआत अपने शालेय जीवन से की।
3. दोनों साहित्यकारों ने अपने लेखन की शुरुआत कहानी विधा से की है।
4. दोनों साहित्यकारों ने उपन्यास, कहानी तथा नाटक विधा में लेखन किया हुआ दिखाई देता है।
5. दोनों साहित्यकारों का अनुभव क्षेत्र व्यापक है।
6. दोनों ने साहित्य सृजन अपनी नौकरी में रहकर किया है।
7. दोनों गहन अध्येता, चिंतनशील, विषय के प्रति न्याय देनेवाले रचनाकार हैं।
8. दोनों साहित्यकारों का बाह्य व्यक्तित्व साधारण है।
9. दोनों घुम्मकड़ प्रवृत्ति के साहित्यकार हैं।
10. दोनों किसान परिवार में जन्में प्रसिद्ध उपन्यासकार हैं।
11. दोनों रचनाकार अपने दांपत्य जीवन से सुखी दिखाई देते हैं।

वैषम्य -

विवेच्य साहित्यकारों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन करने के पश्चात जो वैषम्य दिखाई देते हैं, वे इस प्रकार हैं -

1. गिरिराज किशोर की रचना यात्रा का आरंभ सन् 1964 को दिखाई देता है तथा विश्वास पाटील की रचना यात्रा का आरंभ सन् 1980 में दिखाई देता है।
2. गिरिराज किशोर की तुलना में विश्वास पाटील का लेखन अल्प दिखाई देता है।
3. गिरिराज किशोर शिक्षा क्षेत्र से जुड़े व्यक्ति रहे हैं तथा विश्वास पाटील प्रशासकीय सेवा से।

द्वितीय अध्याय : ''पहला गिरमिटिया तथा महानायक का विषयगत विवेचन''

साम्य -

1. 'पहला गिरमिटिया' तथा 'महानायक' स्वातंत्र्योत्तर काल के अंतिम दशक के वैचारिक दृष्टि से सशक्त और बृहत् उपन्यास हैं।
2. दोनों ऐतिहासिक चरित्रप्रधान उपन्यास हैं।
3. पृष्ठों की संख्या की दृष्टि से 'पहला गिरमिटिया' 904 पृष्ठों का तथा 'महानायक' 704 पृष्ठों का बृहत् उपन्यास है।
4. कथ्य को आगे बढ़ाने के लिए दोनों उपन्यास में संवादों को आधार बनाया है। इसलिए संवाद दोनों उपन्यासकारों के उपन्यास की जान बन गए हैं।
5. दोनों उपन्यासों के नायकों में संघर्ष दिखाई देता है।
6. दोनों उपन्यासकारों के नायक अपने ध्येय के प्राप्ति के लिए परिवारों से टूटे हुए दिखाई देते हैं।
7. विशुद्ध यथार्थता दोनों उपन्यास की विशेष प्रवृत्ति है।
8. दोनों उपन्यासों के नायक उच्चशिक्षित हैं।

   जैसे - 'पहला गिरमिटिया' - मोहनदास - बैरिस्टर,

   'महानायक' - सुभाषबाबू - आय.सी.एस.।

वैषम्य -

1. 'पहला गिरमिटिया' में चित्रित मोहनदास के विचार अहिंसात्मक हैं बल्कि 'महानायक' में चित्रित सुभाषबाबू के विचार क्रांतिकारी एवं विद्रोहात्मक हैं।

2. 'पहला गिरमिटिया' में वर्णनात्मकता अधिकतम दिखाई देती है। (उदा. समुद्र वर्णन - दक्षिण अफ्रीका प्रस्तान का वर्णन) बल्कि 'महानायक' में वर्णनात्मकता अल्प दिखाई देती है।

तृतीय अध्याय : ''तुलनात्मक अध्ययन और विवेच्य उपन्यासों के तुलनात्मक अध्ययन का स्वरुप''

प्रस्तुत अध्याय में तुलनात्मक अध्ययन का स्वरूपगत विवेचन प्रस्तुत किया गया है जिसमें तुलनात्मक अध्ययन की उपयोगिता, महत्त्व, स्वरूप और तुलनात्मक अध्ययन की विविध प्रणालियों पर प्रकाश डाला गया है। साथ ही विवेच्य उपन्यासों के तुलनात्मक अध्ययन की उपयोगिता, महत्त्व, उद्देश्य, स्वरूप और पद्धतियों को स्पष्ट किया है। तुलनात्मक अध्ययन के पश्चात् जो निष्कर्ष या तथ्य सामने आए हैं वे इस प्रकार हैं -

1. प्राय: तुलना का मतलब सिर्फ दो कृतियों के गुण-दोष, श्रेष्ठ-कनिष्ठ साहित्य कृति सिद्ध करना नहीं बल्कि तुलनात्मक अध्ययन से दो साहित्यकारों के साहित्य का सूक्ष्मता से सूक्ष्म अध्ययन करके उनमें स्थित साम्य-वैषम्य को प्रस्तुत करना है।
2. दो भिन्न भाषा-भाषी साहित्य से परिचित होने के कारण इससे दो भाषाओं के व्याकरण, भाषा, शैली आदि से लाभान्वित होने में मदद होती है।
3. तुलनात्मक अध्ययन से विश्वबंधुत्व की भावना बढ़ती है तथा राष्ट्रीय एकता निर्माण होने में मदद होती है।
4. तुलनात्मक अध्ययन दो भिन्न भाषाओं की एक साहित्यिक विधा का अध्ययन, एक ही भाषा की दो विधाओं अथवा प्रवृत्तियों का अध्ययन, एक ही भाषा साहित्य में दो लेखक या दो कृतियाँ, दो भिन्न भाषाओं के काल-विशेष, दो भाषाओं के दो अलग-अलग लेखक, दो भिन्न भाषाओं के एक ही विधा पर लिखनेवाले दो लेखक, दो भिन्न भाषाओं की एक साहित्यिक प्रवृत्ति, दो भिन्न भाषाओं के काव्यशास्त्र की तुलना, दो भिन्न भाषाओं का भाषा-वैज्ञानिक तथा व्याकरण संबंधी तुलना तथा दो भिन्न भाषाओं के दो लेखकों के समग्र साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन आदि प्रणालियों के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
5. विवेच्य उपन्यासकारों के उपन्यासों में निहित 'विचार पक्ष' का अध्ययन करने के पश्चात् विवेच्य उपन्यासों के लेखकों के विचारों को समझने में मदद होती है।

चतुर्थ अध्याय : ''विवेच्य उपन्यासों का विचार पक्ष : तुलनात्मक अध्ययन''

गिरिराज किशोर का 'पहला गिरमिटिया' तथा विश्वास पाटील का 'महानायक' दोनों उपन्यासों के विचार पक्ष का अध्ययन करने के पश्चात् कहा जा सकता है कि दोनों उपन्यासों में कुछ विचारों को लेकर साम्य या समानता दिखाई देती है तो कुछ बिचारों में वैषम्य दिखाई देता है। दोनों उपन्यासों में प्राप्त साम्य और वैषम्य इस प्रकार हैं -

साम्य -

1. दोनों उपन्यासों में राष्ट्रविषयक विचार प्रधान विचार के रूप में अभिव्यक्त हुए हैं। 'पहला गिरमिटिया' उपन्यास में मोहनदास द्वारा गिरमिटियों में एकता स्थापित करने का प्रयास, मताधिकार का विरोध, हिंदु-मुस्लिमों को भेदभाव भूलकर राष्ट्रीयता की मुख्य धारा में लाने का प्रयास राष्ट्र की इज्जत की रक्षा करने की शिक्षा, मोहनदास के राष्ट्र के कल्याण की तड़प, देशवासियों पर हो रहे अन्याय के विरूद्ध आवाज उठाने के लिए भारतीय नेताओं को प्रेरित करना आदि राष्ट्रीयता की भावना से ओत-प्रोत विचार प्रस्तुत उपन्यास में पर्याप्त मात्रा में मिलते हैं। 'महानायक' उपन्यास में राष्ट्रविषयक विचारों की अधिकता दिखाई देती है। इसमें सुभाषबाबू के इंग्लैंड में आय.सी.एस. की परीक्षा चौथे नंबर से उत्तीर्ण होने के बावजूद ब्रिटिशों की गुलामी से युक्त नौकरी को स्वीकार कराने की बजाय नौकरी से त्यागपत्र, भारत देश को मुक्त करने की उनकी तड़प, देश में साम्यवाद लाने का प्रयास, राष्ट्र उन्नति की आकांक्षा, 'अखंड स्वतंत्र भारत' का उनका सपना आदि राष्ट्रविषयक विचार के द्योतक है।
2. 'जन' को जागृत करनेवाले विचार जनजागृति विषयक विचार कहलाते हैं। दोनों में जनजागृति विषयक विचारों का काफी मात्रा में चित्रण मिलता है। 'पहला गिरमिटिया' उपन्यास में मोहनदास द्वारा गिरमिटियों पर हो रहे अन्याय के प्रति गिरमिटियों को एकत्र कर उन में जनजागृति करना, अन्याय के प्रति सचेत करना, उन पर हो रहे अन्याय-अत्याचार से उन्हें अवगत कराना, गिरमिटियों में प्रेरणा एवं चेतना जगाना आदि जनजागृति विषयक विचार दिखाई देते हैं। 'महानायक' उपन्यास में सुभाषबाबू ने लोगों में परिवर्तन तथा जनजागृति लाने का प्रयास किया है। इसमें देश की युवा पीढ़ी को चेतना देने का प्रयास, देशवासियों को अन्याय न सह कर अन्याय के विरोध में संघर्ष करने की चेतावनी देना, स्त्री-शक्ति को अपनी शक्ति का एहसास दिलाना आदि जनजागृति विषयक विचार दिखाई देते हैं।

3. भटके हुए व्यक्ति को, दिशाभ्रमित समाज को तथा टूटे, बिखरे हुए जीवन को उपदेश के माध्यम से सही मार्ग या दिशा दिखाना ही उपदेशविषयक विचार हैं। दोनों उपन्यासों में उपदेश विषयक विचारों की प्रधानता दिखाई देती है। 'पहला गिरमिटिया' उपन्यास में मोहनदास द्वारा स्वच्छता का महत्त्व समझाना, स्वच्छता के प्रति सजग कराना, समाज को दलितों से मतभेद न रखने की सलाह देना, दूरसंचार माध्यमों (अखबार वगैरेह) के संपर्क में रहना, अहिंसात्मक मार्ग से सत्याग्रह करने की सलाह देना, दक्षिण अफ्रीका आयोजित सभा अधिकारियों को मानवतावादी उपदेशों की हिमायत करने का उपदेश देना आदि उपदेशविषयक विचार दिखाई देते हैं। 'महानायक' उपन्यास में सुभाषबाबू द्वारा छोटे बच्चों को शिक्षा ग्रहण करने की सलाह देना, युवा पीढ़ी को व्यसनों से दूर रहकर राष्ट्र के लिए समर्पित होने की भावना को उत्तेजित करना, स्त्री को घर से बाहर निकलकर राष्ट्र की मुख्य धारा में आने का संदेश देना आदि उपदेश विषयक विचार प्रधान रूप से दिखाई देते हैं।
4. दोनों उपन्यासों में परिवर्तन विषयक विचारों में साम्य दिखाई देता है। व्यवस्था में परिवर्तन दोनों के केंद्र में रहा है। 'पहला गिरमिटिया' उपन्यास में मोहनदास द्वारा काला-गोरा भेद में परिवर्तन, दक्षिण अफ्रीका में रेल से गोरों द्वारा पिटकर ढकेल देने के बाद 'सत्याग्रह' के मार्ग से अंग्रेजों में परिवर्तन लाने का प्रयास, गिरमिटियों में मातृभाषा के साथ अँग्रेजी भाषा सिखने के लिए प्रवृत्त करना आदि परिवर्तन विषयक विचार दिखाई देते हैं। 'महानायक' उपन्यास में सुभाषबाबू के परिवर्तन विषयक विचारों की अभिव्यक्ति सशक्त मात्रा में दिखाई देती है। सभी का विरोध सहते हुए 'संपूर्ण स्वातंत्र्य की मांग', स्वतंत्र भारत के नियोजन में आधुनिक परिवर्तनवादी विचारों की हिमायत, किसानों, निम्न-जातियों तथा सर्वहारा समाज में परिवर्तन लाने का प्रयास, भूमंडलीकरण की दौड में औद्योगिक विकास को बढ़ावा देने का प्रयास, प्रगत विज्ञान पर जोर आदि परिवर्तन विषयक विचारों की अभिव्यक्ति हुई है।
5. जो विचार अर्थ की ओर ले जाते हैं या जिन विचारों में अर्थ की प्रधानता रहती है ऐसे विचार अर्थविषयक विचार कहलाते हैं। दोनों उपन्यासों में अर्थविषयक विचार सामान्य रूप से दिखाई देते हैं। 'पहला गिरमिटिया' उपन्यास में मोहनदास के वकालत शुरू करने के बाद असफलता मिलने पर दादा अब्दुला के केस के सिलसिले में अर्थाभाव के कारण

दक्षिण अफ्रीका जाने की विवशता, बेकारी के कारण गिरमिटियों का अर्थार्जन के लिए दक्षिण अफ्रीका जाना, कम तनख्वाह में रात-दिन मेहनत करना आदि अर्थविषयक विचार दिखाई देते हैं। 'महानायक' उपन्यास में आजाद हिंद फौज निर्माण हेतु पैसा इकट्ठा करना, देशवासियों द्वारा देश की स्वतंत्रता के लिए आजाद हिंद सेना को संपत्ति दान करना आदि अर्थविषक विचारों की अभिव्यक्ति हुई है।

वैषम्य -

6. दोनों उपन्यासों में विद्रोहविषयक विचारों में वैषम्य दिखाई देता है। 'पहला गिरमिटिया' उपन्यास में मोहनदास के विचार अहिंसात्मक होने के कारण प्रस्तुत उपन्यास में विद्रोह अत्यल्प मात्रा में दिखाई देता है तो 'महानायक' उपन्यास के नायक सुभाषबाबू क्रांतिकारक विचारों के जाज्वल प्रतीक होने के कारण उनके विचारों में संघर्ष तथा विद्रोह की प्रवृत्ति अधिक मात्रा में दिखाई देती है।
7. दोनों उपन्यासों में श्रम विषयक विचारों में वैषम्य दिखाई देता है। 'पहला गिरमिटिया' उपन्यास गिरमिटियों पर आधारित होने के कारण श्रमविषयक विचारों की प्रधानता दिखाई देती है। 'महानायक' उपन्यास में श्रमविषयक विचार अत्यल्प मात्रा में दिखाई देते हैं।
8. दोनों उपन्यासों में इतिहास विषयक विचारों में वैषम्य दिखाई देता है। 'पहला गिरमिटिया' उपन्यास में इतिहास विषयक विचार अल्प मात्रा में दिखाई देता है तो 'महानायक' उपन्यास में इतिहास विषयक विचार अधिक मात्रा में दिखाई देते हैं।

पंचम अध्याय : "औपन्यासिक कला की दृष्टि से विवेच्य उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन"

विवेच्य उपन्यासों का औपन्यासिक कला की दृष्टि से विवेचन-विश्लेषण करने के पश्चात् कहा जा सकता है कि दोनों उपन्यासकारों की रचनाओं में कुछ साम्य तथा कुछ वैषम्य प्राप्त होते हैं।

साम्य -

विवेच्य उपन्यासों में जो साम्य दिखाई देते हैं, वे इस प्रकार हैं -

1. विवेच्य दोनों रचनाकारों ने अपनी औपन्यासिक कला में कथावस्तु, चरित्र-चित्रण, संवाद, देश-काल-वातावरण, भाषा-शैली तथा उद्देश्य आदि तत्वों का प्रयोग किया है।

2. विवेच्य रचनाओं में आजादी के संघर्ष पुरूष महानायकों का चित्रण प्राप्त होता है। साथ ही इन पात्रों के चरित्र-चित्रण में रचनाकार सफल हुए हैं।
3. विवेच्य रचनाओं में संक्षिप्त, रोचक, अँग्रेजी भाषा से युक्त संवादों का प्रयोग मिलता है। साथ ही इन संवादों में काव्यात्मक भाषा का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में परिलक्षित होता है।
4. विवेच्य उपन्यासों में अरबी, फारसी, संस्कृत तथा अँग्रेजी शब्दों का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में मिलता है।
5. विवेच्य उपन्यासों में आत्मकथनात्मक, वर्णनात्मक, प्रश्नात्मक एवं पत्रात्मक शैली का प्रयोग सफलता के साथ किया हुआ मिलता है।
6. दोनों रचनाकारों ने विवेच्य उपन्यासों में तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, एवं ऐतिहासिक परिस्थितियों को अभिव्यक्ति दी है।

वैषम्य -

दोनों उपन्यासकारों के औपन्यासिक कला का अध्ययन करने के पश्चात जो वैषम्य दिखाई देते हैं, वे इस प्रकार हैं -

1. गिरिराज किशोर के 'पहला गिरमिटिया' उपन्यास में विश्वास पाटील के 'महानायक' की तुलना में वर्णनात्मकता अधिक दिखाई देती है।
2. गिरिराज किशोर के 'पहला गिरमिटिया' उपन्यास में फ्लैशबैक शैली, आत्मकथनात्मक शैली, पत्रात्मक शैली, डायरी शैली, टेलिफोनिक शैली, प्रश्नात्मक शैली, स्वप्न शैली तथा किस्सागोई शैली आदि शैलियों का प्रयोग मिलता है, जब की विश्वास पाटील के 'महानायक' में वर्णनात्मक शैली, आत्मकथनात्मक शैली, प्रश्नात्मक शैली तथा पत्रात्मक शैली आदि शैलियों का प्रयोग दिखाई देता है।
3. 'पहला गिरमिटिया' उपन्यास में राजनीतिक परिवेश का चित्रण कम मिलता है बल्कि 'महानायक' उपन्यास में राजनीतिक परिवेश अपने विभिन्न तेवरों के साथ चित्रित हुआ है।

❑ प्रस्तुत शोध कार्य की उपलब्धियाँ -

1. गिरिराज किशोर के 'पहला गिरमिटिया' तथा विश्वास पाटील के 'महानायक' का विचार पक्ष सशक्त रूप में दिखाई देता है।

2. विवेच्य दोनों उपन्यासों में प्राप्त विचार अच्छाई-बुराई, संगति-असंगति, नीति-अनीति आदि का लेखा-जोखा प्रस्तुत कर समाज परिवर्तन की माँग करते हैं।
3. विवेच्य उपन्यासों में चित्रित नायकों का संघर्ष (मोहनदास और सुभाषबाबू) अपने राष्ट्र के स्वाभिमान तथा राष्ट्रनिष्ठा के लिए दिखाई देता है।
4. विवेच्य उपन्यासों के नायक अन्याय, अत्याचार तथा शोषण के विरूद्ध संघर्ष करने की प्रेरणा प्रदान करता है।
5. विवेच्य उपन्यासों का अध्ययन करने से तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों का बोध होता है।
6. अपने देश को आजाद बनाने में जिन स्वातंत्र्यसेनानियों ने महान कार्य किया है उनके विचारों के आदर्शों को आज की युवा पीढ़ी भूल रही है। अत: उनके आदर्श, उनके बलिदान, उनके विचार समझने में मदद होती है।

❑ अध्ययन की नई दिशाएँ -

गिरिराज किशोर का 'पहला गिरमिटिया' तथा विश्वास पाटील के 'महानायक' उपन्यास पर निम्नांकित विषयों को लेकर स्वतंत्र रूप से अनुसंधान किया जा सकता है -

1. ''चरित्रप्रधान उपन्यास 'पहला गिरमिटिया' और 'महानायक' का तुलनात्मक अध्ययन''
2. ''गिरिराज किशोर तथा विश्वास पाटील के व्यक्तित्व-कृतित्व का तुलनात्मक अध्ययन''

उपर्युक्त विषय मुझे अध्ययन के पश्चात् प्राप्त हुए हैं जिनपर स्वतंत्र रूप से अनुसंधान हो सकता है।

* * * *